बी.एच.डी.एफ-101

स्नातक उपाधि कार्यक्रम
(बी.डी.पी.)

सत्रीय कार्य
(जुलाई 2020 और जनवरी 2021 सत्रों के लिए)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ.–101
हिंदी में आधार पाठ्यक्रम

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY
मानविकी विद्यापीठ
इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110 068

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम
सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच..डी.एफ.–101 / 2020–21

प्रिय छात्र / छात्राओ,

जैसा कि हमने 'कार्यक्रम दर्शिका' में बताया है कि हिंदी के आधार पाठ्यक्रम बी.एच.डी.एफ.–101 का केवल एक सत्रीय कार्य करना है। इस सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। यह सत्रीय कार्य खंड 1 से 4 पर आधरित हैं।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का मुख्य उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप स्वयं उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्यक्रम सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है, उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा के विभिन्न कौशलों का विकास करना है। यह कौशल है : सुनकर समझना, पढ़ना, बोलना और लिखना। इसके लिए भाषा के आधारभूत तत्वों पर अधिकार प्राप्त करना होता है। भाषा सीखने का उद्देश्य यह भी है कि हम उसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कर सकें, विविध विषयों को पढ़कर उन्हें समझ सकें और अपने शब्दों में उन्हें व्यक्त कर सकें तथा साहित्य पढ़कर उसका रसास्वादन ले सकें।

सत्रीय कार्य से आप यह जान सकेंगे कि आपको हिन्दी भाषा के व्यावहारिक उपयोग में कितनी दक्षता प्राप्त हुई है। प्रश्नों का उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का सावधानीपूर्वक अध्ययन करें।

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. सत्रीय कार्य का संबंध खंड 1 से 4 तक है। इसमें भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे गए हैं, जिनका उद्देश्य भाषा के आधारभूत तत्वों पर आपकी लेखन क्षमता जाँचना है। कुछ प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त रूप में देने हैं।

2. इस सत्रीय कार्य में कुछ प्रश्न निबंधात्मक हैं। जिनके उत्तर पठित इकाइयों के आधार पर आपको निर्धारित शब्दों में देने हैं। एक प्रश्न दिये गये अवतरणों के भाव पक्ष की व्याख्या पर आधारित है। एक अन्य प्रश्न में आपको निबंध लिखना है। सत्रीय कार्य में व्याकरण संबंधी कई तरह के प्रश्न पूछे गए हैं। एक प्रश्न पत्र–लेखन लिखने के बारे में है। एक प्रश्न-भाव पल्लवन या संक्षेपण के बारे में हैं। इस प्रकार इन प्रश्नों से जहाँ एक ओर आपकी साहित्य संबंधी समझ विकसित होगी वहीं दूसरी ओर आप हिन्दी भाषा के अपने प्रयोग में भी सुधार ला सकेंगे। उत्तर लिखते हुए भाषागत शुद्धता का विशेष ध्यान रखें।

उत्तर देने के लिए निम्नलिखित विधि से तैयारी करेंगे तो आप के लिए लाभप्रद रहेगा।

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से पुनर्व्यवस्थित कीजिए।

2 **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। संदर्भ और व्याख्या वाले प्रश्न में यह अवश्य जाँच लें कि संदर्भ में कही बातें दिये गये अंश के अनुरूप हैं। व्याख्या में भी क्रमबद्धता, तार्किकता और स्पष्टता होनी चाहिए। व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर लिखने से पहले अपने उत्तर पर अच्छी तरह से विचार कर लीजिए। अगर आप बिना समझे पुस्तक या अन्य किसी स्रोत की सहायता से उत्तर देंगे तो इससे आपको कोई लाभ नहीं होगा और सत्रांत परीक्षा में आप ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पायेंगे। निबंधात्मक प्रश्न में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्ध और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) वाक्यों और अनुच्छेदों (Paragraphs) के बीच स्पष्ट क्रमबद्धता हो,

ग) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

घ) उत्तर, प्रश्न में निर्धारित शब्दों से अधिक लंबा न हो, और

ङ) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3 **प्रस्तुति** : जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

सत्रीय कार्य जमा करने की अंतिम तिथि :
जुलाई 2020 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2021
जनवरी 2021 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2020

शुभकामनाओं सहित!

नोट :	याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य

(पाठ्यक्रम के सभी खंडों पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.एफ–101
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.एफ–101/टीएमए/2020-21
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए : 10
   (क) हाथ-पांव फूलना
   (ख) कान खड़े होना
   (ग) नौ दो ग्यारह होना
   (घ) गुस्सा गटक जाना
   (ङ) छाती पर मूंग दलना

2. निम्नलिखित शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द बनाइए : 5
   (क) अंतः + ध्यान
   (ख) पुस्तक + आलय
   (ग) युग + अनुसार
   (घ) निम्न + अंकित
   (ङ) सदा + एव

3. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो समानार्थी शब्द बताइए : 5
   (क) स्वतंत्रता
   (ख) गृह
   (ग) कमल
   (घ) नृप
   (ङ) बादल

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए : 5
   (क) कटु
   (ख) सज्जन
   (ग) विशेष
   (घ) रात्रि
   (ङ) लघु

5. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए : 5
   (क) जगन्नाथ
   (ख) प्रत्यक्ष
   (ग) पवन
   (घ) मनोहर
   (ङ) अत्याचार

6 निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए : 5
   (क) सुदिन
   (ख) अनुपयोगी
   (ग) दुर्लभ
   (घ) प्रसिद्ध
   (ङ) आरोहण

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय बताइए : 5
   (क) सामाजिक
   (ख) गाड़ीवान

(ग) सफलता
(घ) ज्ञानी
(ङ) नदियां

8 निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250–300 शब्दों में लिखिए : 5X2=10

(क) 'पूस की रात' कहानी का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

(ख) महादेवी वर्मा के संरचना शिल्प की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिए।

9. निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए : 5X2=10

क) कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो।
श्री रघुनाथ-कृपाल-कृपा तें संत-सुभाव गहौंगे।।1।।
जथालाभ संतोष सदा काहू सों कुछ न चहौंगे
परहित-निरत निरंतर, मन क्रम बचन नेम निबहौंगे।।2।।
परूष बचन अति दुसह स्रवन सुनि तेहि पावक न दहौंगो
विगतमान सम सीतल मन, परगुन, नहिं दोष कहौंगो।।3।।
परिहरि देह जनित चिंता, दुख-सुख समबुद्धि सहौंगो
तुलसीदास प्रभु यहि पथ रहि, अविचल हरि भक्ति लहौंगो।।4।।

ख) सखि, पतंग भी जलता है हा! दीपक भी जलता है।
सीस हिलाकर दीपक कहता–
''बंधु! वृथा ही तू क्यों दहता?''
पर पतंग पड़कर ही रहता!
कितनी विह्वलता है।
दोनों ओर प्रेम पलता है।
बचकर हाय! पतंग मरे क्या?
प्रणय छोड़कर प्राण धरे क्या?
जले नहीं तो मरा करे क्या?
क्या यह असफलता है?
दोनों और प्रेम पलता है।

10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

(क) पर्यावरण सुरक्षा
(ख) साहित्य का उद्देश्य
(ग) लोकतंत्र का महत्व

11. अपनी कॉलोनी में बिजली कटौती की समस्या के समाधान हेतु संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए। 10

12. 'का वर्षा जब कृषि सुखाने' का भाव-पल्लवन कीजिए। 10

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके आधार पर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर दीजिएः 2X5=10

औद्योगिक विकास की जरूरतों और नगरीकरण की प्रवृत्ति ने वन संपदा को काफी नुकसान पहुँचाया है। पेड़-पौधे न केवल वायु में आवश्यक ऑक्सीजन की मात्रा को सुरक्षित रखते हैं बल्कि उने कारण भू-स्खलन, जमीन का कटाव, नदियों में मिट्टी का बहना आदि भी नियंत्रित रहते हैं। वनसंपदा वायु में आवश्यक आर्द्रता की मात्रा को बनाए रखती है जो वर्षा आदि के लिए आवश्यक है किंतु लगातार पेड़ों के काटे जाने से मौसम पर बहुत बुरा असर पड़ा है। भू-स्खलन व बाढ़ों के साथ-साथ वर्षा के औसत में लगातार गिरावट आयी है। उद्योगों से निकलने वाली गैसों, परमाणु ऊर्जा तथा नाभिकीय हथियारों के

कारण वायुमंडल में बढ़ती रेडियोसक्रियता तथा जहरीले अपशिष्टों ने पेड़-पौधों के जीवन को दूभर बनाया है। वैज्ञानिकों ने इस खतरे की ओर बार-बार ध्यान दिलाया है। अगर प्रदूषण की यही प्रवृत्ति बनी रही तो पेड़-पौधों का जीवन खतरे में पड़ जाएगा। वैसे भी इधर यूरोप में जहाँ नाभिकीय हथियारों के भंडार तथा परमाणु ऊर्जा के विशाल केंद्र मौजूद हैं, वनों के मरने की प्रवृत्ति एक नये तरह के पारिस्थितिक संतुलन की ओर हमें धकेल रही है।

पहले के वीरान क्षेत्रों में मनुष्य की बस्तियाँ बस जाने, जहरीले पदार्थों के व्यापक उपयोग तथा प्रकृति के निर्मम शोषण की वजह से जातियों के विलोप की दर में तेज़ी से बढ़ोतरी हुई है। एक अनुमान के अनुसार हर वर्ष एक जाति या उपजाति विलुप्त हो जाती है। इस समय पक्षियों और जानवरों की एक हजार जातियों के लुप्त होने का खतरा है। कुछ वैज्ञानिकों का विचार है कि पौधे की किसी एक जाति के लुप्त होने से कीटों, जानवरों या अन्य पौधों की 10 से 30 तक जातियाँ विलुप्त हो सकती हैं। यदि यह प्रवृत्ति जारी रहती है तो पूरा जैव-मंडल विरूपित हो सकता है।

क) वन संपदा की हानि के प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए।

ख) नाभिकीय प्रदूषण का पारिस्थितिक तन्त्र पर क्या प्रभाव पड़ा है?

ग) पेड़ों के काटे जाने से पर्यावरण किस रूप में प्रभावित होता है?

घ) जातियों के विलोप दर में वृद्धि का कारण स्पष्ट कीजिए।

ङ) इस गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।